परमेश्वर की आत्मा

(पवित्र आत्मा)

The Spirit of God

Duncan Heaster

& Shakeel Ahmed

क्रिस्टेडेलफियन

पो. ओ. बाक्स. - 10

मुजफ्फरनगर, 251002, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians

P.O. Box 10,

Muzaffarnagar 251002, U.P.

परमेश्वर की आत्मा
(पवित्र आत्मा)
The Spirit of God

परमेश्वर की आत्मा (पवित्र आत्मा) बाईबिल का ईक महत्व पूर्ण विषय है, क्योंकि बहुत से यानि अधिकतर क्रिश्चियन समुदाय इस बारे में बहुत गलत अवधारणा (विचार) रखते है, और इस परमेश्वर की आत्मा से सम्बन्धित विषय में अधिकतर मसीही एक विचार से सहमत नहीं हैं, परमेश्वर की आत्मा की इब्रानी भाषा में अनुवाद परमेश्वर की स्वांस, या परमेश्वर की शक्ति से किया गया है, आईये इस विषय में गहनता पूर्वक अध्य्यन करने के लिए, हम लोग परमेश्वर के वचन बाईबिल में से कुछ अनुच्छेदों का अध्य्यन करेगें,

"और चिन्हों और अद्‌वभुत कामों की सामर्थ से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्‌वारा किए, यहाँ तक कि मैनें यरूशलेम से लेकर चारो ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का पुरा-पुरा प्रचार किया।" (रोमियों 15:19)

"क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है। वह तुझ से कहता तो है, खा पी, परन्तु उसका मन तुझ से लगा नहीं।" (नीतिवचन 23:7)

"हे सांप के बच्चों, तुम बुरे होकर क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है।" (मत्ती 12:34)

"सेनाओं के यहोवा ने यह शपथ खाई है, नि:सन्देह जैसा मैं ने ठाना है, वैसा ही हो जाएगा, और जैसी मैं ने युक्ति की है, वैसी ही पूरी होगी।" (यशायाह 14:24)

"और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था: तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था। तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो: तो उजियाला हो गया।" (उत्पत्ति 1:2-3)

"उसकी आत्मा से आकाशमणडल स्वच्छ हो जाता है, वह अपने हाथ से वेग भागनेवाले नाग को मार देता है।" (अय्यूब 26:13)

"आकाशमण्डल यहोवा के वचन से, और उसके सारे गण उसके मुंह ही श्वास से बने।" (भजन संहिता 33:6)

"यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उस से कहा,

मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है? यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" (यूहन्ना 3:3-5)

"फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं; और तू धरती को नया कर देता है।" (भजन संहिता 104:30)

"और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनो में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया।" (उत्पत्ति 2:7)

"यहोवा, जो सारे प्राणियों की आत्माओं का परमेश्वर है, वह इस मण्डली के लोगों के ऊपर किसी पुरूष को नियुक्त कर दे," (गिनती 27:16)

"फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी आधीन न रहें जिस से जीवित रहें।" (इब्रानियों 12:9)

"हे यहोवा, तू ने मुझे जांच कर जान लिया है। तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है। मेरे चलने और लेटने की तू भली भांति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है। हे यहोवा, मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो। तू ने मुझे आगे पीछे घेर रखा है, और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है। यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है; यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है। मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं? वा तेरे साम्हने से किधर भागूं?" (भजन संहिता 139:1-7)

"यदि वह मनुष्य से अपना मन हटाये और अपना आत्मा और श्वास अपने ही में समेट ले, तो सब देहधारी एक संग नाश हो जाएंगे, और मनुष्य फिर मिट्टी में मिल जाएगा।" (अय्यूब 34:14-15)

इस प्रकार हम उपतोक्त समस्त अनुच्छेदों को देखकर यह पूर्ण रूप से समझ जा सकते है कि है कि, परमेस्वर की आत्मा का अर्थ, परमेश्वर की स्वांस व शक्ति से है, उपरोक्त अनुच्छेदों में पूर्ण रूप से यह भी बता दिया गया है कि, परमेश्वर ने अपनी आत्मा की शक्ति से समस्त विस्व्ह की रचना कि, और उसके बाद परमेश्वर ने मिट्टी से मनुष्य की रचना के बाद, परमेश्वर ने अपनी श्वांस मनुष्यों के नथुनों में फूंकी, इस प्रकार मनुष्य एक प्राणी बन गया, इस प्रका बाईबिल में हम यह भी पाते है कि परमेश्वर की स्वांस (आत्मा) का अर्थ जीवन से भी है, आईये इसके सम्बन्ध में हम बाईबिल की पहली पुस्तक उत्पत्ति में से एक अनुच्छेद भी देखते है, जो इस प्रकार है "... उनमें से जितनों के नथनों में जीवन का श्वांस था, सब मर मिटे।" (उत्पत्ति 7:22) इस प्रकार हम यह समझ जा सकते है कि परमेश्वर की आत्मा स्वांस का अर्थ जीवन से भी लगाया गया है,

उप्रोक्त बाईबिल के अनुच्छेदों में यह भी पूर्ण रूप से बता दिया गया है, कि हम जैसा अपने मनों में विचार करते है, वैसे ही हम है, हमारे जीवन का सारा दारोमदार और विश्वास का अधार हमारे मन और सोच विचार की प्रति क्रिया पर निर्भर करता है, क्योंकि परमेश्वर मनों को जानने वाला है।

पवित्र आत्मा

Holy Spirit

आईये हम लोग पवित्र आत्मा के भी सम्बन्ध में, बाईबिल में से कुछ अनुच्छेदों को देखेगें, जो परमेश्वर का वचन है,

"परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।" (यूहन्ना 4:24)

"फिर यीशु पवित्र आत्मा से भरा हुआ, यरदन से लैटा, और चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा, और शैतान उसकी परीक्षा करता रहा।" (लूका 4:1)

"परमेश्वर कहता है कि अन्त के दिनों में ऐसा होगां, कि मैं अपनी आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणीयां करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्त देखेंगे।" (प्रेरितों के काम 2:17)

उपरोक्त बाईबिल के अनुच्छेदों को देखने से हम अवश्य कुछ यह सोचने पर विवश होते होगें कि "परमेश्वर की आत्मा" और "पवित्र आत्मा में अवश्य" अन्तर है और दोनों अलग-अलग है, परन्तु यह सत्य नहीं है, वास्तविकता तो यह है कि बाईबिल के पुराने नियम में परमेश्वर की आत्मा और नये नियम में है, वह पुराने नियम के परमे्वर की आत्मा के तुल्य (समकक्ष) है, और निम्न लिखित अनुच्छेदों का अर्थ भी परमेश्वर की आत्मा से है।

"स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परम प्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगीं, इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।" (लूका 1:35)

"सो परमेश्वर जो आशा का दाता है, तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।।" (रोमियों 15:13)

"और चिन्हों और अद्‌भुत कामों की सामर्थ से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से, मेरे ही द्‌वारा किए यहाँ तक कि मैंने यरूशलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का पूरा-पूरा प्रचार किया।" (रोमियों 15:19)

"क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में वरन सामर्थ और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुचाँ है; जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे लिए तुम में कैसे बन गये थे।" (1 थिस्सलुनीकियों 1:5)

"और देखो, जिसकी प्रतिज्ञां मेरे पिता ने की है, मैं उस को तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।।" (लूका 24:49)

"कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया, वह भलाई करता, और सबको जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।" (प्रेरितों के काम 10:38)

"ओर मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञांन की लुभाने वाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ का प्रमाण था।" (1 कुरिन्थियों 2:4)

उपरोक्त समस्त बाईबिल को अनुच्छेदों को देखकर हम अब यह अवश्य समझ गये होंगे कि नये नियम में जो "पवित्र आत्मा" के शब्द का प्रयोग हुआ है, वह पुराने नियम के "परमेश्वर की आत्मा" के शब्द के ही स्थान पर प्रयोग किया गया, उपरोक्त अनुच्छेदों को देखने व पड़ने से, हमें इस बात का भी ज्ञांत होता है कि, नये नियम में पवित्र आत्मा शब्द का प्रयोग परमेश्वर की सामर्थ से हुआ है, जो पुराने नियम में भी पाया जाता है, परमेश्वर की सामर्थ अर्थात, परमेश्वर की आत्मा, परमेश्वर अपनी आत्मा के द्‌वारा प्रेणा शक्ति व मार्ग दर्शन भी करता है, हम बाईबिल में यह पाते है कि परमेश्वर ने अपनी आत्मा की शक्ति के द्‌वारा सम्पूर्ण विश्व की रचना की, मनुष्य को जीवित प्राणी बनाया, यीशु को जन्माया तथा अपने भक्त जनों की अगिवाई की और उनका मार्ग दर्शन भी किया।

प्रेरणां

Inspiration

अभी हम लोगों ने इसके पिछले के अध्याय में परमेश्वर की आत्मा के बारे में अध्य्यन किय और यह भलि भातिं समझ गये कि परमेश्वर की आत्मा (पवित्र आत्मा) क्या है, और परमेश्वर ने अपनी आत्मा का प्रयोग कहाँ-कहाँ और किस-किस प्रकार किया, अब हम लोग इस अध्य्याय में यह अध्य्यन करेगें कि परमेश्वर की प्रएरणां किन-किन लोगों पर,

किन-किन कारणों से, कहाँ-कहाँ, और किस प्रकार दर्शायी, इस विषय में हम लोग और भलि-भाँति से समझने के लिए, बाईबिल के कुछ अनुच्छेदों को देखेंगे, और यह समझने की चेष्टा करेगें कि, बाईबिल इस सम्बन्ध में हम लोगों को क्या शिक्षा देती है।

"और बालक पन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है, हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर परमेश्वर की प्रेरणां से रचा गया है, और उपदेश, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभ दायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।" (2 तीमुथियुस 3:15-17)

"सत्य के द्‌वारा उन्हें पवित्र कर, क्योंकि तेरा वचन सत्य है।" (यूहन्ना 17:17)

"क्योंकि जब मैं बातें करता हूँ, तब मैं जोर से पुकार पुकार कर ललकारता हूँ, तब उपद्रव और उत्पात हुआ, हाँ उत्पात, क्योंकि यहोवा का वचन दिन भर मेरे लिये निन्दा और ठट्ठा का कारण होता रहता है, यदि मैं कहूँ मैं उसकी चर्चा न करूंगा, न उसके नाम से बोलूंगा, तो मेरे हृदय की ऐसी दशा होगीं, मानो मेरी हड्डियों में धधकती हुई आग हो, और मैं अपने को रोकते-रोकते थक गया, पर मुझ से रहा नहीं जाता।" (यिर्मयाह 20:8-9)

"तेरा वचन पूरी रीति से बताया हुआ है, इसलिये तेरा दास उसमें प्रीति रखता है।" (भजन संहिता 119:140)

"हे भाइयों, अवश्य था कि पवित्र शास्त्र का वह लेख पूरा हो, जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहूदा के विषय में जो यीशु के पकड़ने वालों का अगुवा था, पहिले से कही थी।" (प्रेरितों के काम 1:16)

"सो जैसा पवित्र आत्मा कहता है, कि आज तुम उसका शब्द सुनो।" (इब्रानियों 3:7)

"क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ-गांठ, और गूदे-गूदे को अलग करके, आर-पार छेदता है, और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है, और सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है, वरन जिससे हमें काम है, उसी की आंखों के सामने सब-वस्तुएं खुली और बेपरदा हैं।" (इब्रानियों 4:12-13)

"इसलिये हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते है, कि जब हमारे द्‌वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुँचा, तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझ कर और सचमुच यह ऐसा ही है। ग्रहण किया, और वह तुम जो विश्वास रखते हो, प्रभाव शाली है।" (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)

"और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञांन की लुभाने वाली बाते नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ का प्रमाण था।" (1 कुरिन्थियों 2:4)
"जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगां।" (1 तीमुथियुस 3:5)
"वे भक्ति का भेष तो धरेगें, पर उसकी शक्ति को न मानेगें, ऐसों से परे रहता।" (2 तीमुथियुस 3:5)
"क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" (1 कुरिन्थियों 1:18)

और एक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि, बाईबिल के लेखको ने सिर्फ अपने आप को यह नहीं समझा कि, वे परमेश्वर की तरफ से प्रेरणां प्राप्त थे, परन्तु उन्होंने बाईबिल के दूसरे लेखकों को भी स्वीकारा की वे परमेश्वर से प्रेणा प्राप्त थे, आईये इसके सम्बन्ध में हम बाईबिल में से कुछ प्रमुख अनुच्छेदों को देखेगें, और गहनता पूर्वक अध्य्यन करने के बाद, यह समझने की चेष्टा करेगें कि, बाईबिल इस सम्बन्ध में हम लोगों को क्या शिक्षा दे रही है।

"उसने उनसे पूछा, तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है?" (मत्ती 22:43)
"यह न समझो, कि मैं पिता के सामने तुम पर दोष लगाऊगां, तुम पर दोष लगाने वाला तो है, अर्थात् मूसा जिस पर तुमने भरोसा रखा है, क्योंकि यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिए कि उसने मेरे विषय में लिखा है, परन्तु यदि तुम उसकी लिखी हुई बातों की प्रतीति नहीं करते, तो मेरी बातों को क्यों कर प्रतीति करोगें।" (यूहन्ना 5:45-47)
"क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञां को टाल कर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो और उसने उनसे कहा, तुम अपनी रीतियों को मानने के लिये, परमेश्वर की आज्ञां कैसी अच्छी तरह से टाल देते हो।" (मरकुस 7:8-9)
"दक्खिन की रानी न्याय के दिन, इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएगीं, क्योंकि सुलैमान का ज्ञांन सुनने के लिए, वोह पृथ्वी की छोर से आई, और देखो, यहाँ वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है।" (मत्ती 12:42)
"और हमारे पास जो भविष्य वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा है और तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझ कर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है, जब तक कि पौवं न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे, पर पहिले यह जान लो कि

पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्य वाणी किसी के अपने ही विचार धारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि कोई भी भविष्य वाणी मनुष्य की ईच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।" (2 पतरस 1:19,20,21)

"क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है कि दाबने वाले, बैल का मुँह न बान्धना क्योंकि मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है।" (1 तीमुथियुस 5:18)

"उसी घर में रहो, और जो कुछ उनसे मिले, वहीं खाओ पीओ, क्योंकि मजदूर को अपनी मजदूरी मिलनी चाहिए, घर-घर न फिरना।" (लूका 10:7)

"हे भाईयों, मैं तुम्हें बता देता हू कि जो सुसमाचार मैने सुनाया है, वह मनुष्य का सा नहीं, क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुँचा, और न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मसीह के प्रकाश से मिला।" (गलातियों 1:12)

"इसी कारण मैंने सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुचाँ दी, जो मुझे पहुँची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया।" (1 कुरिन्थियों 15:3)

"क्या तुम यह समझते हो, कि पवित्र शास्त्र व्यर्थ कहता है? जिस आत्मा को उसने हमारे भीतर बसाया है, क्या वह ऐसी लालसा करता है, जिसका प्रतिफल डाह हो?" (याकूब 4:5)

"क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।" (गलातियों 5:17)

"इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारीस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है।" (इब्रानियों 1:2)

"यदि कोई मनुष्य अपने आप को भविष्यवक्ता या आत्मिक जन समझते है तो यह जान ले, कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, वे प्रभु की आज्ञाएं हैं।" (1 कुरिन्थियों 14:37)

"हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं, क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।" (1 यूहन्ना 4:1)

"मैं तेरे काम, और परिश्रम, और तेरा धीरज जानता हूँ, और यह भी, कि तू बुरे लोगों को तो देख नहीं सकता, और जो अपने आप को प्रेरित कहते हैं, और है, नहीं, उन्हें तू ने परख कर झूठा पाया।" (प्रकाशितवाक्य 2:2)

उपरोक्त समस्त अनुच्छेदो में हम लोगों को यह भलि भातिं बता दिया गया है, कि समस्त बाईबिल परमेश्वर की प्रेरणां से लिखा गया है, और यह बात भी बहुत ही स्पष्ट है कि बाईबिल का नया नियम भी परमेश्वर की प्रेरणां से लिखा गया है, सन्त पौलुस ने जो कुछ कहा, और लिखा वे भी परमेश्वर की प्ररणां से प्रेरित थे, सन्त पौलुस की समस्त लेकिका पुराने नियम के आधार पर आधारित थी, और पौलुस ने जो कुछ भी लिखा वे परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रेरित थी, और यह वही आत्मा थी जो पुराने नियम में परमेश्वर की आत्मा जिक्र किया गया है, और जब पौलुस ने परमेश्वर के वचन का व्याख्यान किया तो उसे उसी समय लोगों ने उसे परमेश्वर का वचन माना, क्योंकि वे परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित थी, इसी प्रकार परमेश्वर का वचन हम लोगों को यह भी बताता है कि, यह हम लोगों का महान कर्तब्य होता है कि हम लोग हर एक बात परमेश्वर की तरफ से है या नहीं, क्योंकि बहुत सारे झुठे भविष्य वक्ता है, जो अपने आप को परमेश्वर का पवित्र जन बोलते है, जो वास्तव में नहीं होते है, इस प्रकार हम लोग यह अवश्य समझ गये होगें कि, बाईबिल की समस्त लेखिका परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित है, और परमेश्वर का सच्चा वचन है।

पवित्र आत्मा का वरदान

The gifts of the Holy Spirit

पवित्र आत्मा का वरदान बाईबिल का एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि आधिकांश मसीही इस विषय में एक मत नहीं रखते है, और अधिकांश मसीहियों का पवित्र-आत्मा के सम्बन्ध में बहुत ही अन्ध विचार है; पवित्र आत्मा का वरदान अर्थात परमेश्वर की शक्ति लोगों को समयानुसार किसी उद्वेश्य की प्राप्ति के लिए दी गयी थी, और जब वोह उद्वेश्य पूरे हो गये तो परमेश्वर ने पवित्र आत्मा का वरदान फिर वापिस ले लिया, पवित्र आत्मा का वरदान किसी बिमार व्यक्ति या जन की चंगाई या किसी विप्पतियों से छुटकारे के लिए नहीं दी गयी थी, वरन् पवित्र आत्मा का वरदान, परमेश्वर ने मात्र अपनी ईच्छा की पूर्ती हेतु, और परमेश्वर ने अपने वचन को जन-जन तक पहुंचाने हेतु, अपनी आत्मा की शक्ति अर्थात पवित्र आत्मा का वरदान कुछ विशेष व्यक्तियों को अल्पकालीन समय के लिए दिया, और जब उद्वेश्य की पूर्ती हो गयी तो परमेश्वर ने फिर उस वरदान को वापिस से लिया, हम पुराने नियम में भी यह पाते है, आईये इस सम्दर्भ में हम कुछ बाईबिल के अनुच्छेदों के देखने व समझने का प्रयत्न करेगें।

"किसने यहोवा की आत्मा को मार्ग बताया, या उसका मन्त्री होकर उसको ज्ञांन सिखाया है?" (यशायाह 40:13)
"और जितनों के हृदय में बुद्धि है, जिनको मैंने बुद्धि देने वाली आत्मा से परिपूर्ण किया है, उनको तू हारून के वस्त्र बनाने की आज्ञां दे कि वह मेरे निमित्त याजक का काम करने के लिए पवित्र बनें।" (निर्गमन 28:3)
"और मैं उसको परमेश्वर की आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञांन, और सब प्रकार के कार्यों की समझ देने वाली आत्मा है, परिपूर्ण करता हूँ, जिससे वह कारीगरी के कार्य बुद्धि से निकाल-निकाल कर सब भांति की बनावट में अर्थात् सोने, चांदी और पीतल में और जड़ने के लिए, मणि काटने में, और लकड़ी के खोदने में काम करे।" (निर्गमन 31:3-5)
"मैं अकेला इन सब लोगों का भार नहीं सम्भाल सकता, क्योंकि यह मेरी शक्ति के बाहर है, और जो मेरे साथ यही व्यवहार करना है, तो मुझ पर तेरा इतना अनुग्रह हो, कि तू मेरे प्राण एकदम ले ले, जिससे मैं अपनी दुर्दशा न देखने पाऊं, यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएली पुरनियों में से सत्तर ऐसे पुरूष मेरे पास इकटठे कर, जिनको तू जानता है कि वे प्रजा के पुरनिए और उनके सरदार है, और मिलाप वाले तम्बू के पास ले आ, कि वे तेरे साथ यहां खड़े हों, तब मैं उतरकर तुझ से वहाँ बातें करूगां, और जो आत्मा तुझ में है, उस में से कुछ लेकर उनमें समझाऊंगा, और वे इन लोगों का भार तेरे संग उठायें रहेंगे, और तुझे उसको अकेले उठाना न पड़ेगा।" (गिनती 11:14-17)
"और नून का पुत्र यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से परिपूर्ण था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रखे थे, और इस्राएली उस आज्ञां के अनुसार जो याहोवा ने मूसा को दी थी, उसको मानते रहे।" (व्यवस्थाविवरण 34:9)
"उसमें यहोवा का आत्मा समाया, और वह इस्राएलियों का न्यायी बन गया, और लड़ने को निकला, और यहोवा ने हरम के राजा कूशत्रिशातैम को उसके हाथ में कर दिया, और वह कूशत्रिशातैम पर जयवन्त हुआ।" (न्यायियों 3:10)
"तब यहोवा का आत्मा गिदोन में समाया, और उसने नरसिगां फूका, तब अबीए जेरी उसकी सुनने के लिए इकटठे हुए।" (न्यायियों 6:34)
"तब यहोवा का आत्मा यिप्तह में समा गया, और वह गिलाद के मिस्पे में आया, और गिलाद के मिस्पे से होकर अम्मोनियों की ओर चला।" (न्यायियों 11:29)
"तब शिमशोन अपने माता-पिता को संग ले तिम्ना को चलकर तिम्ना की दाख की बारी के पास पहुँचा, वहाँ उसके सामने एक जवान सिंह गरजने लगा, तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और यद्यपि उसके हाथ में कुछ न था, तौभी उसने

उसको ऐसा फाड़ डाला, जैसा कोई बकरी का बच्चा फाड़े, अपना यह काम उसने अपने पिता व माता को न बतलाया।" (न्यायियों 14:5-6)

"तब यहोवा का आत्मा उस पर बल से उतरा, और उसने अश्कलोन को जाकर वहाँ के तीस पूरूषों को मार डाला, और उनका धन लूटकर तीस जोड़े कपड़ों की पहेली के बताने वालों को दे दिया, तब उसका क्रोध भड़का, और वह अपने पिता के घर गया।" (न्यायियों 14:19)

"वह लही तक आ गया था, कि पलिश्ती उसको देखकर ललकारने लगे, तब यहोवा परमेश्वर का आत्मा उस पर बल से उतरा, और उसकी बांहों की रस्सियां आग में जले हुए सन के समान हो गई, और उसके हाथों के बन्धन मानों गलकर टूट पड़े।" (न्यायियों 15:14)

अपरोक्त हम बाईबिल के समस्त पुराने नियम में से दिये गये अनुच्छेदों को देख कर यह अवश्य समझ गये होगें कि, परमेश्वर ने अपनी आत्मा कुछ विशेष कार्य हेतु, कुछ विशेष व्यक्तियों पर उतारी, और जब वह कार्य पूर्ण को गया तो परमेश्वर ने अपनी आत्मा के दान को वापिस ले लिया, उदारहरण स्वरूप परमेश्वर ने सामसन को शेर को मार डालने कीऔ शक्ति प्रदान की थी, परन्तु सामसन को स्वयं यह ज्ञांत न था कि उसे यह शक्ति कहाँ से प्राप्त हुई, पर उसे यह शक्ति परमेश्वर ने अपनी आत्मा के दान द्वारा उसे दिया था, और फिर पुनः उससे यह शक्ति वापिस से ली गयी, परमेश्वर ने अपना यह वरदान मात्र एक शेर को ही मारने के लिए दिया था, न कि समस्त शेर को मार गिराने की। पहली शताब्दी में वरदान दिये जाने के कारण-प्रयायः हम लोग इससे भलि भातिं परिचित होगें कि परमेश्वर ने पहली शताब्दी में मसीहिओं को अपनी आत्मा (पवित्र आत्मा) का वरदान दिया था, अब हम लोग बाईबिल के नये नियम के अनुच्छेदों को देखकर यह समझने का प्रयत्न करेगें कि पहली शताब्दि के मसीहीओं को यह वरदान क्यों, कब और किस कारण वश प्रदान किया गया थ,

"और उसने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार का प्रचार करो, जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगां, परन्तु जो विश्वास ने करेगां, वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:15,16)

"इसलिये वह कहता है, कि वह ऊंचें पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए, (उसके चढ़ने से, और क्या पाया जाता है केवल यह कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था, और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश के ऊपर चढ़ भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करे।) और उसने कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त कर के, और कितनों को रखवाले और उपदेशक

नियुक्त करके दे दिया, जिससे पवित्र लोग सिद्ध जो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए।" (इफिसियों 4:8-12)

"क्योंकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूँ कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक बरदान दूँ जिससे तुम स्थिर हो जाओ।" (रोमियों 1:11)

"क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में वरन सामर्थ और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुचाँ है, जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे लिए तुम में कैसे बन गए थे।" (1 थिस्सलुनीकियों 1:5)

"कि उसमें होकर तुम हर बात में अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञांन में धनी किए गए, कि मसीह की गवाही तुम में पक्की निकले।" (1 कुरिन्थियों 1:5,6)

"क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में कहने का हियाब नहीं, जो मसीह ने अन्य जातियों की अधीनता के लिए वचन, कर्म, चिन्हों, अद्भुत कामों की सामर्थ, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किए: यहाँ तक कि मैंने यरूशलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुस तक मसीह के सुसमाचार का पूरा-पूरा प्रचार किया।" (रोमियों 15:18,19)

"और साथ ही परमेश्वर भी अपनी ईच्छा के अनुसार चिन्हों, और अद्वभुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बाटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।" (इब्रानियों 2:4)

"तब सूबे में जो कुछ हुआ था, उसे देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित होकर विश्वास किया।।" (प्रेरितों के काम 13:12)

"और वे बहुत दिन तक वहां रहे, और प्रभु के भरोसे पर हियाब से बातें करते थे, और वह उन के हाथों से चिन्ह और अद्वभुत काम करवा कर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था।" (प्रेरितों के काम 14:3)

"और उन्होंने निकल कर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे वचन को, दृढ़ करता रहा।" (मरकुस 16:20)

बाईबिल के नये नियम में से दिये गये समस्त अनुच्छेदों में जो पहली शताब्दी के मसीहिओं के बारे में यह बताता है कि पवित्र आत्मा का वरदान उनको किस लिए दिया गया था, और पवित्र आत्मा को देनें क्या कारण था, और पवित्र आत्मा की अवधि क्या थ? उपरोक्त अनुच्छेदों से हमें यह ज्ञांत होता है कि, यीशु मसीह का सर्वप्रथम, अपने शिष्यों को आदेश यह था कि, तुम जाकर पूरी सृष्टि को सुसमाचार सुनाओ, और वास्तविकता यह थी कि सुसमाचार के प्रचार हेतु मार्ग दर्शन व शक्ति की आवश्यकता थी

क्योंकि उस समय सुसमाचार लिखित रूप से नहीं थी, जिस प्रकार से सुसमाचार और नया नियम अब लिखित रुप से मौजुद है, और उस समय यीशु के शिष्यों और भक्त जनों को परमेश्वर की शक्ति, अर्थात परमेश्वर की आत्मा, (पवित्र आत्मा) की आवश्यकता थी, जो सुसमाचार के प्रचार में सहायक बन सके, इसलिए परमेश्वर ने अपनी शक्ति, यीशु के शिष्यों को प्रदान की, और यह पवित्र आत्मा का वरदान, कुछ विशेष व्यक्तियों को, मात्र अल्प कालीन के लिए दिया गया था, और जैसे वह उद्वेश्य पुरा हो गया, परमेश्वर ने अपनी पवित्र आत्मा को पुनः वापिस ले लिया, इसी प्रका सन्त पौलुस ने भी अपने पत्रों में से अनेक स्थानों में यह दर्शाया कि, उसने जो कुछ लिखा है, और लिख रहा है, वे पवित्र आत्मा की प्रेरणां से लिखा है, और सन्त पौलुस ने अपनी लेखिका में यह भी बताया कि समस्त बाईबिल परमेश्वर की आत्मा की शक्ति व प्रेरणां से लिखा गया है, और समस्त बाईबिल का हर एक शब्द, परमेश्वर का वचन है। और पहली शताब्दी के कुछ मसीहियों को यीशु के शुभ-समाचार को अधिक कार्यवान्वित करने के लिए उनको कुछ चिन्हों और अद्वभुत कार्य करने की भी शक्ति प्रदान की गयी थी, जिससे शुभ समाचार सुनने वाले, उन अद्वभुत कार्यों और चिन्हों को देख कर यह समझ गये कि, यह अवश्य परमेश्वर का जन है, और उसके मुख से जो भी शब्द निकल रहे है, और जो कुछ वोह यीशु के बारे में बोल रहा, परमेश्वर से प्रेरणां प्राप्त है।

विशेष समयानुसार, विशेष वरदान

Specific circumstances, specific gifts

अब हम लोग यह देखगें कि, परमेश्वर ने कुछ विशेष वरदान, कुछ विशेष व्यक्तिओं को, कुछ विशेष उद्वेश्य की पूर्ति हेतु दिया, और जब उस विशेष उद्वेश्य की पूर्ति हो गयी तो, परमेश्वर ने उस विशेष आत्मा के वरदान को फिर वापिस से लिया अब हम लोग निम्नलिखित बाईबिल के अनुच्छेदों में यह देखने का प्रयत्न करेगें कि बाईबिल इस सम्बन्ध में हम लोगों को क्या शिक्षा दे रही है,

"और वे सब पवित्र आत्मा से भर गये, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे।" (प्रेरितों के काम 2:4)

"तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा।" (प्रेरितों के काम 4:8)

"जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहाँ वे इकटठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाब से सुनाते रहे।" (प्रेरितों के काम 4:31)

"तब हनन्याह उठ कर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिससे तू आया, तुझे भेजा है कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।" (प्रेरितों के काम 9:17)

"तब शाऊल ने जिसका नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उसकी ओर टकट की लगा कर कहा।" (प्रेरितों के काम 13:9)

"पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है।" (इफिसियों 4:7)

"क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है, क्योंकि वह आत्मा नाप-नाप कर नहीं देता।" (यूहन्ना 3:34)

हम उपरिक्त दिये बाईबिल के नये नियम के कुछ अनुच्छेदों को देखने से हमें इस बात का ज्ञांत होता है कि, परमेश्वर ने पवित्र आत्मा का दान कुछ विशेष व्यक्ति को, कुछ विशेष परिस्थितियों में कुछ विशेष उद्वेश्य की पूर्ती हेतु दिया गया था, जैसे पतरस को पवित्र आत्मा का एक महान दान अन्य भाषाओं का दिया गया था, जब पतरस ने अन्य भाषाओं में बोलना शुरू किया तो लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि सुनाने वालों ने कहा, यह (पतरस) कैसे नयी-नयी भाषाओं में बोलना शुरू कर दिया जो भाषा उसे वचपन से नहीं आती थी, परन्तु परमेश्वर ने उसे अन्य भाषाओं में बोलने का वरदान शुभ समाचार के प्रचार हेतु दिया था, और यह भाषाओं का वरदान शुभ समाचार के प्रचार में बहुत लाभदायक सिद्ध हुये, जब पतरस अन्य भाषाओं में बोल रहा था तो, उस समय बहुत अधिक संख्या में लोगों ने परमेश्वर के वचन को ग्रहण किया, और बपतिस्मा प्राप्त किया, अन्य भाषा में बोलने का वरदान, पतरस को विशेष रूप से दिया गया थ।

पहली शताब्दी के मसीहीओं को आत्मीक वरदान

The first century spirit gifts

1. भविष्य वाणी

1. Prophecy

युनानी भाषा में "नबी" शब्द का अर्थ "पैगब्मर" से लिया गया है, याबी परमेश्वर का एक असा चुना हुआ जन जो परमेश्वर के पैगाम को समस्त जन तक पहुँचाता हो, आईये इस सन्दर्भ में हम नये नियम के दो अनुच्छेदों को देखेगें, जो परमेश्वर का वचन है,

"और हमारे पास जो भविष्य वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा और तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझ कर उस पर ध्यान करते हो, कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है, जब तक पौवं न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे ह्रदयों में न चमक उठे, पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्य वाणी किसी के अपने ही विचार धारा के अधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि कोई भी भविष्य वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।" (2 पतरस 1:19-21)

"उन्हीं दिनों में कई भविष्य वक्ता यरूशलेम से अन्ताकिया में आए, उन में से अगबुस नाम का एक ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणां से यह बताया, कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा, और वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा, तब चेलों ने ठहराया, कि हर एक अपनी-अपनी पूंजीं के अनुसार यहूदिया में रहने वाले भाईयों की सेवा के लिए कुछ भेजें।" (प्रेरितों के काम 11:27-29)

भविष्यवानी से सम्बन्धित उपरोक्त दोनों बाईबिल के नये नियम के अनुच्छेदों को देखने से हम लोगों को इस बात का ज्ञांन प्राप्त होता है कि पहली शताब्दी के लोगों को जो भविष्यवाणीं का वरदान प्राप्त था, और जो लोग भविष्यवानी करते थे, वास्तव में वे भविष्यवाणीं अल्प कालीन की अवधि में पूर्ण होती थी, और भविष्यवाणी का पूर्ण होना इस बात का सूचक था कि वे जो भविष्यवाणी करते थे, वे परमेश्वर के द्वारा वरदान प्राप्त थे, परन्तु आज कल के बहुत सारे चर्चों में, जो अपने आप को पवित्र आत्मा से परिपूर्ण बोलते है, और जब वे भविष्य वाणी करते है, तो अपने आप को यह कहते है कि वे परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण होकर भविष्यवाणी कर रहे है, परन्तु उनकी भविष्य वाणीयाँ कोई अर्थ नहीं रखती, क्योंकि उनकी भविष्य वाणीयाँ न तो अल्प कालीन और न तो दीर्घ कालीन की अवधि में पूर्ण होती है, और वास्तविकता तो यह है कि, भविष्य वाणी का वरदान पहली शताब्दी के मसीहियों को, कलीसीया की उन्नति के लिए दिया गया था, और अब यह वरदान प्रयायः समाप्त हो चुका है।

2. चगांई

2. Healing

जब हम लोग यह देखते है कि पहली शताब्दी के मसीही यीशु का प्रचार, अपना सब कुछ न्योछावर कर के, अपने पुरे दिल के साथ करते थे, तो उस समय, परमेश्वर ने कुछ

विशेष चुने हुए व्यक्तियों को चगांई का वरदान दिया था, और जब परमेश्वर के जन यीशु के शुभ समाचार का प्रचार करते, और लोगों को चगां करते तो उस आश्चर्य चकित कार्य को देख कर बहुत से लोग विश्वास लाते थे, और यीशु के बताए हुए रास्ते पर चलते थे, चंगाई का अवभुत वरदान होने से, शुभ-समाचार के प्रचार में बहुत सहायक व सफलता प्राप्त होती थी, चंगाई के सन्दंभ में बाईबिल में से कुछ अनुच्छेद इस प्रकार है,

"तब अन्धों की आंखे खोली जाऐगीं और बहिरो के कान भी खोले जाऐगें, तब लंगड़ा हरिण की सी चौकड़िया भरेगां, और गूंगे अपनी जीभ से जय-जय कार करेंगे, क्योंकि जंगल में जल के सोते फूट निकलेगें और मरण-भूमि में नदियां बहने लगेंगी।" (यशायाह 35:5-6)

"और लोग एक जन्म के लंगड़े को ला रहे थे, जिसको वे प्रतिदिन मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर कहलाता है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में जाने वालों से भीख मांगे, तब उसने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाते देखा, तो उनसे भीख मांगी, पतरस ने यूहन्ना के साथ उसकी ओर ध्यान से देखकर कहा, हमारी ओर देख, सो वह उनसे कुछ पाने की आशा रखते हुए उनकी ओर ताकने लगा, तब पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं है, परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूँ, यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर, और उसने उसका दाहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया, और तुरन्त उसके पावों और टखनों में बल आ गया, सब लोगों ने उसे चलते-फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते देख कर, उसको पहचान लिया कि यह वही है, जो मन्दिर के सुन्दर फाटक पर बैठकर भीख मांगा करता था, और उस घटना से जो उसके साथ हुई थी, वे बहुत अचम्भित और चकित हुए, जब वह पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत अचम्भीत करते हुए, उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है, उनके पास दौड़े आए।" (प्रेरितों के काम 3:2-11)

"और प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्‌वभुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे।" (प्रेरितों के काम 5:12)

"कि हम इन मनुष्यों के साथ क्या करें? क्योंकि यरूशलेम के सब रहने वालों पर प्रगट है, कि इनके द्वारा एक प्रसिद्ध चिन्ह दिखाया गया है; और हम इसका इन्कार नही कर सकते।" (प्रेरितों के काम 4:16)

"जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई, और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं।" (प्रेरितों के काम 2:6)

"यहाँ तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए।" (प्रेरितों के काम 5:15)

"तब सूबे ने जो कुछ हुआ था, उसे देखकर और प्रभु के उद्देश्य से चकित होकर विश्वास किया।" (प्रेरितों के काम 13:12)

"लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था, जो पावों का निर्बल था, वह जन्म ही से लंगड़ा था, और कभी न चला था, वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था, और इसने उसकी ओर टकटकी लगा कर देखा कि इसको चगां हो जाने का विश्वास है, और ऊचें शब्द से कहा, अपने पावों के बल सीधा खड़ा हो, तब यह उछल कर चलने फिरने लगा, लोगों ने पौलुस का यह काम देख कर लुकाउनिया की भाषा में ऊचें शब्द से कहा, देवता मनुष्यों के रूप में होकर, हमारे पास उतर आए हैं, और उन्होनें बरनबास को यहूदी, और पौलुस को हिरमेस कहा, क्योंकि वह बातें करने में मुख्य था, और यहूदी के उस मन्दिर का पुजारी जो उनके नगर के सामने था, बैल और फूलों के हार फाटकों पर जाकर लोगों के साथ बलिदान करना चाहता था।" (प्रेरितों के काम 14:8-13)

"इस पर महायाजको और फरीसियों ने मुख्य सभा के लोगों को इकटठा करके कहा, हम करते क्या हैं? यह मनुष्य तो बहुत चिन्ह दिखाता है।" (यूहन्ना 11:47)

"और वह उठा, और तुरन्त खाट उठा कर और सब के सामने से निकल कर चला गया।" (मरकुस 2:12)

चंगाई से सम्बन्धित बाईबिल के समस्त अनुच्छेदों को देख कर हम यह भलि-भातिँ समझ गये होगें कि, चंगाई का वरदान भी परमेश्वर ने अपने विश्वासी जन को कुछ उद्वेश्य की पूर्ति हेतु दिया था, और परमेश्वर का यह उद्वेश्य, उसके अपने वचन को जन-जन तक पहुचाँना था, पतरस और पौलुस को जो चंगाई का वरदान प्राप्त था, उसकी सब से बड़ी विशेषता यह थी कि, उन लोगों ने जिन-जिन जनों को परमेश्वर से प्रार्थना कर के चंगाई दिलाई, वे जन्म से अन्धे या लगड़े थे, और कोई भी जन यह विश्वास नहीं कर सकते था कि यह जो जन्म से अन्धे है, इनको दिखना शुरू हो जायेगां, और जो जन्म से लगड़े है, वोह एक दिन चलना शुरू कर देगे, परन्तु जब पतरस और पौलुस ने प्रार्थना कर के अन्धे और लगड़े को चंगाई प्राप्त करायी तो सब को बहुत आंश्चर्य हुआ, और लोग पतरस और पौलुस के आश्चर्य जनक कार्य को देख कर बहुत ही आश्चर्य चकित हो गये, और इस आश्चर्य क्रम से बहुत से लोगों ने परमेश्वर के वचन को सुना व ग्रहण किया, हम उपरिक्त अनुच्छेदों को देख कर यह भी समझ जा सकते है कि परमेश्वर ने उन्हे को चंगाई दी, जिन्होने यह विश्वास किया कि यदि परमेश्वर चाहे तो

उन्हे चगां कर सकता है, तो यहाँ पर यह बात सुनिश्चित है कि उन्हे चगांई विश्वास के द्वारा प्राप्त हुई, और हम लोगों को एक यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह वरदान पहली शताब्दी के मसीहियों को प्रमाण के साथ प्राप्त था, परन्तु जैसा आज-कल के पवित्र-आत्मा से परिपूर्ण चर्च वालों में से कुछ जन जो अपने आप को चंगाई का वरदान प्राप्त किये हुये जन बताते है, वोह प्रयायः सत्य से बिल्कुल परे है, क्योंकि वे चंगाई दिलाने का तो वादा करते है, परन्तु चंगाई किसी को भी दिला से दिखाने की योग्यता नहीं रखते, प्रयायः पवित्र आत्मा से परिपूर्ण चर्च के लोगों में अनावश्यक मनोवैज्ञांनिकता का प्रभाव है, और यह उन्के स्वंय के सोच की गलत अवधारणा है, पहली शताब्दी के मसीहियों, यानी पतरस और पौलुस को जो चंगाई का वरदान प्राप्त था, वोह उनके द्वारा चंगाई दिलाये जाने के प्रमाण के साथ था।

3. भाषाऐं

3. Tongues

यीशु मसीह का यह प्रमुख आदेश की जाओ, और शुभ समाचार का प्रचार सआरी सृष्टि में जाकर करो, पर यहाँ पर एक याद रखने योग्य तथ्य यह है भाषा सुसमाचार के प्रचार में एक मुख्य बाधा थी, क्योंकि आधिकतर यीशु के शिष्य व विश्वासी शिक्षित नहीं थे, उन्हें अपनी स्वंय की भाषा की भी उतनी जानकारी न थी, और ऐसी दशा में सारी सृष्टि अथवा किसी ऐसे स्थान में प्रचार करना जहा की भाषा वोह स्वंय न जानते एक बहुत ही मुश्किल का कार्य था, यहाँ तक की पौलुस जो यीशु के शुभ समाचार के प्रचार करने के लिए, परमेश्वर से प्रेरित था, और बहुत शिक्षित भी था, उसे भी अन्य-भाषाओं के क्षेत्रों में प्रचार कार्य एक बहुत ही दुर्लभ का कार्य था, परमेश्वर ने पहली शताब्दी के विश्वासियों को भाषा का वरदान शुभ समाचार के प्रचार हेतु दिया था, और जो भाषा का वरदान परमेश्वर ने दिया था, वह कोई अजनबी और समझ में न आने वाली भाषा न होकर, एक विदेशी भाषा का वरदान था, और वह भाषा, उस भाषा - वासी के लोगों में, शुभ समाचार के प्रचार में बहुत ही सहायक थी, और भाषाओं का वरदान, इसलिए प्रदान था कि, शुभसमाचार का कार्य प्रगाति पर रहे। और एक बहुत ध्यान देने योग्य बात यह है कि, इस वर्तमान समय में जैसा बहुत से नया-जन्म पायें हुए व्यक्ति जो आने आप को यह बताते है कि, उन्हे भाषाओं का वरदान प्राप्त है, और वे ऐसी भाषा में बोलते है, जो भाषा नाम की कोई चीज भी नहीं है, और वे एक बिल्कुल ही अजनबी भाषा में बात करते है, जिसको विश्वा का कोई भी व्यक्ति नहीं समझ सकता, ऐसी भाषा बोलने ने क्या लाभ

जिस भाषा को न स्वंय, न कोई दूसरा समझ सके, और ऐसी अज्ञांन भाषा किसी को भी और किसी भी प्रकार से लाभ दायक नहीं प्रतीत हो सकती, पहली शताब्दीयों के मसीहियों को जो भाषाओं का वरदान प्राप्त हुआ था, वोह शुभ समाचार के प्रचार के लिए बहुत ही लाभ दायक था, और वोह ऐसी भाषा थी, जिसका अन्य लोगों में आम प्रचलन था, जैसे यीशु के विश्व से प्रस्थान कर जने के तुरन्त बाद यीशु के शिष्य, यहूदी के पर्व पिन्तेकुस के दिन, अचानक पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर भिन्न-भिन्न भाषाओं में बोलना प्रारम्भ कर दिये और सुनने वालों को यह बहुत की आश्चर्य हुआ कि यह कैसे बिना सिखे ही विदेशी भाषा बोलने लगे, तब सुनने वाले आश्चर्य चकित होकर विश्वास करने लगे, और बहुत अधिक संख्या में लोगों ने विश्वास किया और बपतिस्म लिया।

आईये भाषाओं से सम्बन्धित हम कुछ परमेश्वर के वचन, बाईबिल के अनुच्छेदों को देखेगें, और यह समझने का प्रयत्न करेगें कि बाईबिल इस सम्बन्ध में हमको क्या शिक्षा दे रही है,

"और उसने (यीशु) उनसे कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार का प्रचार करो, जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगां, परन्तु जो विश्वास ने करेगां वह दोषी ठहराया जाऐगां।" (मरकुस 16:15-16)

"जब उन्होने पतरस और यूहन्ना का हियाब देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य है, तो अचम्भा किया, फिर उनको पहचाना कि ये यीशु के साथ रहे हैं।" (प्रेरितों के काम 4:13)

"और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार पवित्र आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे, और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे, जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई, और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं, और वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे, देखो ये जो बोल रहे है, क्या सब गलीली नहीं? तो फिर क्यों हम में से हर एक अपनी-अपनी जन्म भूमि की भाषा सुनता है? हम जो पारथी और मेदी और एलामी लोग और मिसुपुतामिया और यहूदिया और कप्पदूकिया और पुन्तुस और आसिया, फ्रूगिया, पमफूलिया और मिसर और लिबूआ देश जो कुरेने के आस-पास है, इन सब देशों के रहने वाले और रोमी प्रवासी, क्या यहूदी क्या यहूदी मत धारण करने वाले, क्रेती और अरबी भी हैं, परन्तु अपनी-अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं, और वे सब चकित हुए, और घबरा कर एक दूसरे से कहने लगे कि यह क्या हुआ चाहता है?" (प्रेरितों के काम 2:4-12)

"इसके बाद मैंने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने, और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिये हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है।" (प्रकाशितवाक्य 7:9)
"तब मुझ से यह कहा गया, कि तुझे बहुत से लोगों, और जातियों, और भाषाओं, और राजाओं पर, फिर भविष्यवाणी करनी होगीं।" (प्रकाशितवाक्य 10:11)
"और सब लोगों, और कुलों, और भाषाओं, और जातियों में से लोग उनकी लोथें साढ़े तीन दिन तक देखते रहेगें, और उनकी लोथें कब्र में रखने ने देंगे।" (प्रकाशितवाक्य 11:9)
"और उसे यह अधिकार दिया गया, कि पवित्र लोगों से लड़े, और उन पर जय पाए, और उसे हर एक कुल, और लोग, और भाषा, और जाति पर अधिकार दिया गया।" (प्रकाशितवाक्य 13:7)
"इनके वंश अन्य जातियों के द्वीपों के देशों में ऐसे बट गए, कि वे भिन्न-भिन्न भाषाओं, कुलों, और जातियों के अनुसार अलग-अलग हो गए।" (उत्पत्ति 10:5)
"यहोवा तेरे विरूद्ध दूर से, वरन पृथ्वी के छोर से वेग उड़ने वाले उकाब सी एक जाति को चढ़ा लाएगा, जिसकी भाषा को तू न समझेगां।" (व्यवस्थाविवरण 28:49)
"जो निर्दोष, सुन्दर और सब प्रकार की बुद्धि में प्रवीण, और ज्ञांन में निपुण और विद्वान और राजमन्दिर में हाजिर रहने के योग्य हो, और उन्हें कसदियों के शास्त्र और भाषा की शिक्षा दे।" (दानिय्येल 1:4)
"व्यवस्था में लिखा है कि प्रभु कहता है, मैं अन्य भाषा बोलने वालों के द्वारा, और पराए मुख के द्वारा इन लोगों से बात करूंगा तो भी वे मेरी न सुनेगें।" (1 कुरिन्थियों 14:21)
"वह तो इन लोगों से परदेशी होठों और विदेशी भाषा वालों के द्वारा बातें करेगां।" (यशायाह 28:11)
"इसलिये यदि मैं किसी भाषा का अर्थ न समझूं तो बोलने वाले की दृष्टि में परदेशी ठहरूगां, और बोलने वाला मेरी दृष्टि में परदेशी ठहरेगां, इसलिए तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो तो ऐसा प्रयत्न करो, कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो, इस कारण जो अन्य भाषा बोले, तो वह प्रार्थना करे, कि उसका अनुवाद भी कर सके, इसलिए यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती, सो क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूगां, और बुद्धि से भी प्रार्थना करगाँ, मैं आत्मा से गाऊगां, और बुद्धि से भी गाऊगां, और यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगां, तो फिर अज्ञानी

तेरे धन्यवाद पर आमीन क्यों कहेगां? इसलिये कि वह तो नहीं जानता, कि तू क्या कहता है? तू तो भली भांति से धन्यवाद करता है, परन्तु दूसरे की उन्नति नहीं होती, मैं अपने परमेश्‍वर का धन्यवाद करता हूँ, कि मैं तुम सब से अधिक अन्य भाषा में बोलता हूँ, परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हजार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है कि औरों के सिखाने के लिए, बुद्धि से पाँच ही बातें कहूँ।" (1 कुरिन्थियों 14:11-19)

"इसलिए अन्य भाषाएं विश्‍वासियों के लिए नहीं, परन्तु अविश्‍वासियों के लिए चिन्ह हैं, और भविष्य वाणी अविश्‍वासीयों के लिए नहीं, परन्तु विश्‍वासियों के लिये चिन्ह है, सो यदि कलीसिया एक जगह इकटठी हो और सब के सब अन्य भाषा बोले, और अनपढ़े या अविश्‍वासी लोग भीतर आ जाएं तो क्या वे तुम्हें पागल न कहेंगे।" (1 कुरिन्थियों 14:22-23)

"यदि अन्य भाषा में बातें करनी हो, तो दो-दो, या बहुत हो तो तीन-तीन जन बारी-बारी बोले, और एक व्यक्ति अनुवाद करे, परन्तु यदि अनुवाद करने वाला न हो, तो अन्य भाषा बालने वाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से, और परमेश्‍वर से बातें करे। ... और भविष्य वक्ताओं की आत्मा भविष्य वक्ताओं के वश में है, क्येंकि परमेश्‍वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का कर्त्ता है, जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है। ... स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञां नहीं, परन्तु आधीन रहने की आज्ञां है, जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। ... यदि कोई मनुष्य अपने आप को भविष्यवक्ता या आत्मिक जन समझे, तो यह जान ले, कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, वे प्रभु की आज्ञाएं हैं।" (1 कुरिन्थियों 14:27-28,32-33,34,37)

हम लोग बाईबिल के समस्त अनुच्छेदों को देखकर यह भलि भातिँ समझ गये होगें कि, अन्य भाषाओं में बोलने का वरदान जिन लोगों को पहली शताब्दी में दिया गया था, वह अन्य भाषा एक विदेशी भाषा थी, और इस विदेशी भाषा का वरदान मात्र सुसमाचार के प्रकार हेतु दिया गया था, और वह एक ऐसी भाषा थी जिसका अर्थ व भाव समझा जा सकता था, पौलुस ने अपनी लेखिका में हम लोगों को यह स्पष्ट रुप से बता दिया है कि, अन्य भाषा ऐसी होनी चाहिए, जिसका अर्थ लोगों को समझ में आ जाए, और यदि कोई जन अपने आप को यह बोले कि उसे पवित्र आत्मा द्‍वाआ अन्य भाषाओं में बोलने का वरदान प्राप्त है तो वह ऐसी भाषा होनी चाहिए जिसका - भाव वअर्थ लोग समझ सके, और यदि कोई भाषाओं का अनुवाद करने बाला है, तो अऔ भी अच्छा है, सन्त पौलुस ने अपनी लेखिका में हम लोगों को यह सपष्ट रूप से उल्लेख कर करके बता दिया कि,

अन्य भाषा अवश्वासियों के लिए है न कि विश्वासियों के लिए है और सन्त पौलुस ने हम लोगों को यह भि बता दिया कि हमें कलीसिया में हजार व्यर्थ बातें करने से अच्छा है कि दो ही बातें करे, जो कलीसिया की उन्नति में महायक हो सके, इसी प्रकार पौलुस ने अपनी लेखिका में यह भी स्पष्ट कर दी है कि, स्त्रियों को परमेश्वर के अराधनालय स्थल में चुपचाप (मौन की स्थिति) में रहना चाहिए, पौलुस ने स्त्रियों के सम्बन्ध में जो व्यवस्था दी है, वह उसके स्वंय की व्यवस्ता न होकर, उसने परमेश्वर की व्यवस्थानुसार, यह आज्ञां दी कि महिलाओं को परमेश्वर के अराधनालय स्थल में, परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार चुप रहने का आदेश है, परन्तु प्रयायः पवित्र आत्मा से प्रेरित गिरजा घरो में यह पाया जाता है कि स्त्रियां भी अन्य-अन्य भाषाओं में बोलती है, और अक्सर ऐसा भी देखा जाता है कि कई-कई स्त्रियां एक-एक कर के यह कई एक साथ मिल कर अन्य भाषाओं में बोलना शुरू कर देती है, जिससे अराधनालय स्थल में बहुत शोर-शराबा शुरू हो जाता है, और यह शोर-शराबा, व्यर्थ की चिल्लाहट जो कोई भी माने नहीं रखती है, और इससे गिरजा घर की भी किसी भी प्रकार से उन्नति नहीं होती है, सम्पूर्ण रूप से व्यर्थ-अनावश्यक और साथ ही साथ, परमेश्वर की व्यवस्था के भी विपरीत है, इसी कारण वश पौलुस स्त्रियों को परमेश्वर के अराधनालय स्थल में चुप रहने की सलाह देता है पौलुस ने एक सब से उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण टिप्पणी कर के यह भी स्पष्ट रूप से बता दिया कि, यदि आप में से कोई अन्य भाषाओं में बोलने वाला, या भविष्य वक्ता, और कोई ऐसा जन है, जो अपने आप को बहुत आत्मिक समझता है, तो वह यह जान्ले कि, जो वोह कहता है, वह परमेश्वर का वचन है, उसकी स्वंय की कोई बात नहीं है, यानि पौलुस ने लोगों को यह बताया कि जो बाते मैनें तुमसे अन्य भाषाओं व भविष्यवाणी के सम्बन्ध में कही, वह परमेश्वर की व्यवस्थानुसार कही, और हर एक मसीही को इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि, वह कलीसिया में कोई ऐसी भाषा का प्रयोग न करे, और न बोले जो किसी के लिए लाभ दायक न हो, पौलुस हम लोगों को यह बताना चाहता है कि हजार व्यर्थ बाते करने से, दो बाते करना अच्छा है, जो कलीसीया के लिए लाभ दायक हो सकते है, और गिरजा घर में सद्वभावना और शान्ति की स्थिति को बनाए रखते हुए सच्चे दिल से परमेश्वर की अराधना करनी चाहिए, और सब से प्रेम भाव और भाई चारे की तरह रहना चाहिए।

वरदानों का वापिस ले लिया जाना

The withdrawal of the spirit gifts

अब हम लोग इस अश्य्याय के अन्तिम श्रीखंला में इस बात का अध्य्यन करेगें, कि जो पहली शताब्दी के मसीहियों को पवित्र आत्मा द्वारा, कुछ विशेष व्यक्तियों को जो नाना प्रकार के वरदानों से परमेश्वर ने जो परिभूत किया था, क्या वोह वापिस ले लिये गये, और क्या जिस उद्वेश्य से, परमेश्वर ने लोगों को वरदान दिया था, क्या वोह उद्वेश्य वास्तव में पूर्ण हो गये? अथवा यदि वोह उद्वेश्य अपूर्ण है, तो उन उद्वेश्यों की पूर्ती हेतु परमेश्वर फिर से अपनी आत्मा लोगों पर उडेलेगां? हाँ, परन्तु यहाँ एक बात सुनइश्चित है कि, परमेश्वर पुनः अपने विश्वासियों को एक बार फिर से वरदानों से परिपूर्ण करेगां, और यह वरदान विश्वासियों को यीशु के पुनः वापिस आने के बाद, परमेश्वर के राज्य को भलो भाँति से स्थापित करने केतु दिया जायेगां, और इस वरगानों को "आने वाली आधुनिक युग की शक्ति" के नाम से उकारा जायेगां, और इन महान वरदानों का परिणाम यह होगां कि सम्पूं इस्राएल राज्य, और समस्त यहूदी जन, यीशु पर विश्वास करेगें, और अपनी-अपनी गलतियों की माफी मगंते हुए, पूर्ण रूप से परमेश्वर की तरफ फिरेगें, और इन वरदानों का एक और मुख्य उद्वेश्य यह होगां कि परमेश्वर का राज्य, विधिवत और सुचारू रूप से स्थापित हो जाते, और सम्पूर्ण हम को यीशु मसिह, और उसके पुनः आगमन पर सम्पूर्ण रूप से विश्वास की ओर अग्रसित करना, और हमको बाईबिल में कुछ ऐसे भी अनुच्छेद मिलते है, जिससे हम लोगों को इस बात का भी ज्ञांत होता है कि, जिन वरदानों को पहली शताब्दी में लोगों को प्रदान किया गया था, वोह वरदान यीशु के पुनः आगमन पर वापिस ले लिया गया।

"क्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके है, और पवित्र आत्मा के भागी हो गए है, और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आने वाले युग की सार्मथ का स्वाद चख चुके हैं।" (इब्रानियों 6:4-5)

"तुम पेट भरकर खाओगें, और तृप्त होगें, और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम की स्तुति करोगें, जिसने तुम्हारे लिये आश्चर्य के काम किए है, और मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टूटेगी, तब तुम जानोगे कि मैं इस्राएल के बीच में हूँ, और मैं यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूँ, और कोई दूसरा नहीं है और मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टूटेगी, उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपनी आत्मा उण्डेलूगां, तुम्हारे बेटे-बेटियां भविष्यवाणी करेगीं, और तुम्हारे पुरनिऐं स्वप्न देखेगें, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेगें, तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपनी आत्मा उण्डेलूगां।" (योएल 2:26-29)

"प्रेम कभी टलता नहीं, भविष्यवाणियां हों तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हो, तो जाती रहेगीं, ज्ञांन हो, तो मिट जाऐगां, क्योंकि हमारा ज्ञांन अधूरा है, और हमारी

भविष्यवाणीयां अधूरी, परन्तु जब सर्व सिद्ध आऐगां, तो अधूरा पन मिट जाऐगां।" (1 कुरिन्थियों 13:8-10)

"हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर को प्रेरणां से रचा गया है और उपदेश, और समझाने और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।" (2 तीमुथियुस 3:16-17)

"इसलिए वह कहता है कि वह ऊंचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया, और मनुष्यों को दान दिये (उसके चढ़ने से क्या पाया जाता है, केवल यह कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था, और जो उतर गया यह वही है, जो सारे आकाश के ऊपर चढ़ भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करे), और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त कर के, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त कर के, और कितनों को रख वाले और उपदेशक नियुक्त कर के दे दिया, जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाऐं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए, जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाए, और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाए, ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उनके भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर उधर घुमाए जाते हों।" (इफिसियों 4:8-14)

"जिसका प्रचार कर के हम हर एक मनुष्य को जता देते है, और सारे ज्ञांन से हर एक मनुष्य को सिखाते है कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध कर के उपस्थित करें।" (कुलुस्सियों 1:28)

"सत्य के द्वारा उन्हे पवित्र कर, क्योंकि तेरा वचन सत्य है।" (यूहन्ना 17:17)

"जब मैं बालक था, तो मैं बालकों की नाई बोलता था, बालको का सा मन था, बालकों की सी समझ थी, परन्तु जब सियाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दी।" (1 कुरिन्थियों 13:11)

हम उपरोक्तस मस्त बाईबिल के इन उनुच्छेदों को देखकर यह समझ जाते है कि, परमेश्वर का वरदान देने से क्या अभिप्राय था, परमेश्वर ने वरदानों को इसलिए दिया कि, लोगुसकी ईच्छाओं, को भलिं भातिं समझ जाये, और परमेश्वर की कलीसिया उन्नति पायें, और यह वरदान मात्र कुछ विशेष उद्धेश्यों की पूर्ति हेतु परमेश्वर ने दिया, और जब उन उद्वेश्यो की पूर्ति हो गई तो परमेश्वर ने उन वरदानो को पुनः वापिस भी ले लिया, और पहली शताब्दी में वरदानों को देने का एक मुख्त कारण यह भी था कि, उसके वचन को लिखने और समझाने में भी सहायक हो सके, इसलिए तो सन्त पौलुस ने अपनी लेखिका

में यह लिखा कि, परमेश्वर के वचन पर हम लोगों कओ पूर्ण विशआस करना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर का वचन हम लोगों को हर एक अच्छ्री बात सिखाने में सक्षम है, और परमेश्वर का वचन हम लोगों को बुद्धिमान भी बना सकता, और एक स्थान में बाईभिल में यह भी पाया जाता है, कि परमेश्वर का वचन हम लोगों को पवित्र भी कर सकता है, क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, और उसका वचन भी पवित्र है, परमेश्वर का वचन बाईबिल हर एक बात में पूर्ण रूपेण है, और इसलिए उसका वचन हम लोगों को हर एक बात सीखाने में भी सक्षम है। अगर हम सब के सब, परमेश्वर के बताऐ हुए रास्ते, यानि परमेश्वर के वचन बाईबिल के सिद्धान्त पर चलें तो हम मसीहियों में किसी भी प्रकार का मतभेद नहीं रहेगां, और हम सभी लोग परमेश्वर के वचन और मसीहत में एक समान हो जायेगें।

प्रश्नावली

1. निम्नलिखि में से कौन सा शब्द आत्मा से सम्बन्धित है?
   (अ) शाक्ति
   (ब) पवित्र
   (स) स्वांस
   (द) धुल

2. पवित्र आत्मा क्या है?
   (अ) एक व्यक्त्तिव (अथवा कोई एक जन)
   (ब) शाक्ति
   (स) परमेश्वरीय शाक्ति
   (द) त्रिएकता का एक भाग

3. बाईबिल कैसे लिखी गई थी?
   (अ) मनुष्यों ने अपने स्वंय के विचार लिखे।
   (ब) मनुष्यों ने वोह लिखा, जो परमेश्वर को सही भाँता था।
   (स) मनुष्यों की प्रेरणां से, और परमेश्वर की आत्मा द्‌वारा।
   (द) बाईबिल का कुछ अशं, परमेश्वर की प्ररणा से प्रेरित था, और बाकी पूरे अशं परमेश्वर की प्ररणा से प्रेरित नहीं था।

4. निम्न लिखित में से कौन सा ऐसा कारण था, जिससे परमेश्वर ने चमत्कारिक वरदान दिये?
   (अ) शुभ समाचा के पुनः प्रभाव कारी प्रचार हेतु।
   (ब) प्रारम्भिक गिरजा घर्प की उन्नति हेतु।
   (स) लोगों को जबरजस्ती नैतिकता के रास्ते पर लाने हेतु।
   (द) सन्तो को व्यक्तिगत कठिनाईयों से छुटकारा दिलाने हेतु।

5. हम लोग परमेश्वर की सच्चाई का अध्य्यन कहाँ से प्राप्त कर सकते है?

(अ) कुछ अपने विचार द्वारा, और कुछ बाईबिल से।

(ब) बाईबिल के पढ़ने के अतिरिक्त, पवित्र आत्मा की सीधी अगुवाई के द्वारा।

(स) मात्र बाईबिल द्वारा।

(द) धार्मिक पुरोहितों, व धार्मिक अगुवों द्वारा।

क्रिस्टेडेलफियन
पो. ओ. बाक्स. - 10
मुजफ्फरनगर, 251002, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians
P.O. Box 10,
Muzaffarnagar 251002, U.P.